

DEMANDS FOR GRANTS, 1979-80

—Contd.

MINISTRY OF AGRICULTURE AND IRRIGATION—Contd.

सभापति महोदय : श्री जायसवाल ।

श्री अनन्त राम जायसवाल (कैजाबाद) : सभापति महोदय, जहाँ तक प्रति व्यक्ति भ्रान्त की उपलब्धि का सम्बन्ध है, उसमें पिछले पच्चीस, तीस सालों में कोई फर्क नहीं हुआ है—वह जहाँ की तहाँ है। इसलिए इस तरह पूरी तबज्जुह देनी चाहिए। भ्रान्त की पैदावार में जो वृद्धि हुई है, खासी उससे संतोष कर लेना उचित नहीं है।

हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि हमारे देश में छः साल करोड़ लोग ऐसे हैं, जिनकी या तो रोज दोनों बस्त खाना नहीं मिलता है, या दूसरे तीसरे दिन खाना मिलता है। जब सरकार दाल की पैदावार को बढ़ा नहीं पाई है, तो दाल की प्रति व्यक्ति उपलब्धि भी घटती रही है।

मैंने इकानॉमिक सर्वे में बहुत तलाश करने की कोशिश की कि कहीं मिल जाये कि हमारे देश में लोगों की दुध कितना मिलता है, लेकिन वे भाकड़े मुझे कहीं भी नहीं मिले हैं कि इस देश में प्रति व्यक्ति दुध कितना मिलता है। गेरे देशों में दुध की औसत आपत आधा लीटर प्रति व्यक्ति होगी, लेकिन हमारे देश में एक आधमी की सायद कुछ बूंद ही दुध मिलता है। इसलिए सरकार ने इस तथ्य को कभी लोगों के सामने लाने की कोशिश नहीं की है। मैं माहता हूँ कि मंत्री महोदय अपने उत्तर से बतायें कि हमारे देश में दुध की आपत क्या है। मेरा ज्वाल है कि सायद आध चम्मच के आस-पास की औसत होगी।

हमारे देश में ग्राम आधमी की यह हालत है। मैंने जो तस्वीर यहाँ रखी है, अगर सरकार इसको सुधारना चाह, तो इसके लिए बहुत पैसे की जरूरत है—इतने पैसे की, जिसका अन्धाजा नहीं लगाया जा सकता है। यहाँ पर पहले घरेलू की लूट बली, और स्वराज्य मिलने के बाद भी पिछले पच्चीस तीस सालों के दौरान गाँवों के लोगों की हालत में सुधार नहीं हो पाया है और गाँवों का विकास नहीं हो पाया है। इसके लिए बहुत पैसे की जरूरत है। सरकार टैक्स लगा देती है, एक्साइज इवूटी को बढ़ा देती है और इस तरह लोगों की जेबकी को धीरे धीरे बना देती है—और यह इसका उपाय की नहीं है।

मैं आपके सामने एक उपाय रखता हूँ, हालाँकि मुझे शक है कि सरकार इसको कर पायेगी या नहीं। बहुत पहले कहा गया था कि इस देश को बनाने के लिए बड़े लोगों के खर्च पर पारबंदी लगा दी जाये। उससे 15 लाख रुपये—सायद उससे ज्यादा—बच जायेंगे। उस रकम को खेती और गाँवों के विकास और कारखानों के सुधार में लगाया जा सकता है। इस सब में इस बारे में चर्चा भी हो चुकी है।

सभापति महोदय : माननीय सदस्य अपना भाषण अगले दिन कटौत करे।

15.29 hrs.

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS BILLS AND RESOLUTION
THIRTY-FIRST REPORT

श्री राम बिलास पासवान (हाजीपुर) : सभापति महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ :—

“कि यह सभा गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों सम्बंधी समिति के 31वें प्रतिवेदन से, जो 11 अप्रैल, 1979 को सभा में प्रस्तुत किया गया था, सहमत है।”

MR. CHAIRMAN: The question is:

“That this House do agree with the Thirty-first Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 11th April, 1979.”

The motion was adopted.

15.30 hrs.

RESOLUTION RE: BAN ON COW
SLAUGHTER—contd.

MR. CHAIRMAN: The House will now take up further discussion of the following Resolution moved by Dr. Ramji Singh on 2 March, 1979:—

“This House directs the Government to ensure total ban on the slaughter of cows of all ages and calves in consonance with the Directive Principles laid down in Article 48 of the Constitution as interpreted by the Supreme Court as well as necessitated by strong economic considerations based on the recommendations of the Cattle Preservation and Development Committee and the reported fast by Acharya Vinoba Bhave from 21 April, 1979.”

Shri Nathu Singh may continue his speech.

श्री नाथू सिंह (दोसा) : सभापति महोदय, मैं पिछली बार बता रहा था कि यह क्यों आवश्यक है कि भारत में गोहत्या बन्द हो। मैंने बताया था